सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, जुलाई-अगस्त, 2007

सावधान रहो प्रार्थना करो

'परन्तु तुम हर समय सावधान होकर प्रार्थना में लगे रहो जिस से कि इन सब बातों से बच निकलने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के लिए तुम में सामर्थ्य हो।' (लूका २१:३६)

'तुम हर समय सावधान होकर प्रार्थना में लगे रहो।' एक विद्यार्थी के लिए यह कैसे संभव है? काम में व्यस्त एक आदमी के लिए यह कैसे मुमकिन है? परमेश्वर का हमारे से हर समय सम्बन्ध बना रहे, इसलिए वह हमारे अवचेतन मन को प्रशिक्षित करते हैं। हम में रहने वाली यह अन्तर्धारा, सब सन्तों से हमारा मेल कराती है। नियमित समयों पर तुम प्रार्थना अभ्यास करते हो। जिस के द्वारा परमेश्वर से तुम्हारा अचेत मन हमेशा संपर्क में रहता है।

रंगून में, ईरावादी नामक नदी में , एक अन्तर्धारा रहती है। सतह पर बहते जहाज तो इस से प्रभावित नही होते। यदि एक आदमी पानी में गिर जाए तो नीचे का यह प्रवाह उसे बहाकर ले जाता है। और इसलिए उसे बचाना मुश्किल है। आध्यात्मिक जीवन में भी एक ऐसी ही चीज है, वह है - प्रार्थना की अन्तर्धारा, जिससे तुम्हारा अचेत मन हमेशा प्रार्थना में रहता है। यहाँ तक की तुम्हारे स्वप्नों में भी प्रार्थना की अन्तर्धारा रहती है।

कोलार सोने की खदानें, सोने की इन खानों में यंत्रों को कभी बंद नही किया जाता। ये यंत्र एक बार रुक जाएं तो, उन्हें दुबारा काम में लाने के लिए, गरम करने में छः महीने लगेंगे। इसलिए वे हमेशा चालू रहते है। एक प्रार्थना करता आदमी, जब प्रार्थना में अभ्यास करते अपने को आगे बढ़ता रहे तो, उसमें

पृष्ठ २ पर..सावधान रहो..

आत्मिक उन्नति केलिए देखना न भूलें

"परमेश्वर की चुनौती"

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह ६:३० बजे

ऐसा ही होना अवश्य है।

'क्या तू सोचता है कि में अपने पिता से विनती नहीं कर सकता? और क्या वह तुरन्त ही बारह सेनाओं से अधिक स्वर्गदूतों को मुझे नही सौंप सकता? परन्तु तब पवित्रशास्त्र का लेख कैसे पूरा होगा कि ऐसा ही होना अवश्य है?' (मत्ती २६:५३,५४)

'ऐसा ही होना अवश्य है' - प्रभु के विषय में यह एक बात थी। परमेश्वर द्वारा चुने गये या बुलाये गये, हर एक का अपना-अपना नियमित लक्ष्य है। यह लक्ष्य प्रभु ने निर्धारित किया है। तुम्हें और मुझे अपने से कहना है, 'परमेश्वर के उद्देश्य को मानने में मैं असफल कैसे हो सकता हूँ? कैसे?

प्रभु का मेरे प्रति महान उद्देश्य है। और अपनी मृत्यु द्वारा परमेश्वर उसे सफल बनाने वाले है। पवित्र वचन ऐसा कहता है। परमेश्वर की इस योजना के अधीन होने में, मैं कैसे असफल हो सकता हूँ? पवित्र वचन को मानने में, मैं कैसे असक्षम रह सकता हूँ? अगर हमारा व्यवहार इस तरह रहता, तो परमेश्वर के लिए हम कितने सामर्थ को काम में ला पाते! 'प्रभु, चाहे मुझे कुछ भी दाम चुकाने पड़े, मैं तुम्हारे वचन का पालन करने वाला हूँ!' ऐसी आज्ञा-पालन का परिणाम, कोई भी माप नही पायेगा।

प्रभु ने कहा, 'यह मेरे आधीन है कि मैं कोई दूसरा विकल्प तलाशने की कोशिश करू। मैं अपने पिता से विनती करूं तो वह बारह सेना, स्वगदूतों की, मुझे सौंपेंगे। मगर तब पवित्रशास्त्र का लेख कैसे पूरा होगा?' सामान्यतः हम पवित्र वचन के बदले दूसरे रास्ते ढूढ़ने की कोशिश करते रहते हैं। - स्वयं चुने हुए मार्गों का, किसी भी तरह की सफाई देकर समर्थन करते है।- ' इसी तरह करने के अलावा मेरे पास और कोई चारा नही था।' लोग आज्ञा-पालन करना बहुत कठिन पाते है। तुम में से कुछ लोग अध्यापक हैं। मैं आशा करता हूँ कि तुम अपने प्रधान अध्यापक या प्रधान अध्यापिका का आज्ञा-पालन करते हो। यदि तुम उनके आधीन न हो तो तुम घमंडी हो और अपना घमंड दिखाने जा रहे हो। इस कारण सेवा-अभिलेख में एक काला निशान पाओगे। तुम नहीं चाहते की ऐसा हो। और शायद इससे बचे रहने के लिए, तुम झुक जाते होगे। यह सहर्ष और पूर्ण हृदय से किया गया समर्पण नही है। यह झुकाव काले निशान से बचने के लिए है।

मगर परमेश्वर और उनके वचन के आधीन होना एक बहुत ही अलग बात है। तुम्हारे मन में भयानक संघर्ष उत्पन्न हो सकता है। मगर परमेश्वर तुम्हें ऐसे स्तर पर ले आयेंगे, जहाँ तुम अपने पूरे मन से, सहर्ष उनके आधीन हो जाओगे। अगर तुम उस स्तर पर नही पहुँच पाते, तो परमेश्वर तुम्हें पूर्ण रूप से इस्तेमाल नही कर पायेगें।

'ठीक है, मैं अपने पूरे मन से परमेश्वर के आधीन हो जाऊँगा। अगर मैं न झुकुं तो कुछ रुकावटें और कुछ बाधायें उत्पन्न हो सकती हैं। यदि मैं अपने पूरे मन से आज्ञा-पालन करू तो , तब वह मेरे स्वेच्छा-जीवन का अन्त होगा। तब मुझे अपनी जिन्दगी को ही भूलना पड़ेगा।' - मैं सोचता हूँ कि कई लोग इस हद तक आ पहुँचे है। 'अगर तुम पूर्ण रूप से आज्ञा मानो, तो अपने जीवन के बारे में भूलना ही पड़ेगा।' - शैतान तुम से ऐसी बातें कहता होगा। मगर नही। तुम्हें परमेश्वर के वचन द्वारा शैतान का सामना करना होगा। तब तुम उसे चुप करा पाओगे। बाईबल कहता है, 'जो कोई मेरे कारण और सुसमाचार के कारण अपना प्राण खोता है वह उसे पाएगा।' तुम्हें शैतान से कहना है, 'शैतान, तुम कह रहे हो, मेरे जीवन का अन्त हो चुका है। मगर यीशु कह रहे हैं, मैं जीवन पाऊँगा। मैं तुम पर नही बल्कि यीशु पर विश्वास करना चाहूँगा।' क्या तुम अपने पूरे मन से परमेश्वर को मानोगे?

यीशु समान दीनता तक मसीह का आज्ञाकारी होने से तुम महान विषयों को देख पाओगे। पतरस ने तलवार से बचाव करने की कोशिश की। मगर यीशु ने इसे, परमेश्वर की योजनाओं को रद्द करने का प्रयत्न माना था। 'अगर मैं परमेश्वर की न मानूं, तब पवित्रशास्त्र का लेख कैसे पूरा होगा?' परमेश्वर से ऐसा कहना उचित होगा - 'अगर मैं इस मोड़ पर परमेश्वर को असफल बनाऊँ, उसके बुलावे का लिहाज ना करूँ, समर्पण और स्वार्थ त्याग करने में परमेश्वर की न मानूं । तो लाखों लोगों को बचाने का परमेश्वर का उद्देश्य कैसे सफल होगा?'

इसका कोई विकल्प सोच पाओगे? क्रूस बिना क्या ऐसा कोई समाधान सोच पाओगे? प्रभु यीशु के पुनरूत्थान की सामर्थ्य के बिना, ऐसी किसी दुनिया की कल्पना कर पाओगे? ऐसी किसी संभावना के

पृष्ठ २ पर..ऐसा ही होना..

पृष्ठ १ से..ऐसा ही होना...

विचार से भी मैं काँपता हूँ। यदि तुम परमेश्वर के वचन को पूरा करने से इनकार करो तो - क्या इस असफलता के विस्तार की कल्पना कर पाओगे?

अगर मैंने पिता परमेश्वर की न मानी होती तो क्या होता, यह बात हम सहन भी नही कर पायेंगे? हम में से हज़ारों के लिए यह निर्विघ्न अंधकार और कभी कम न होने वाली दुर्गति होती। मेरे पिताजी का आज्ञा-पालन, जबरदस्ती करवाया गया समर्पण नही है। हमारे प्रभु ने किस तरह पिता परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। यह उनमें हम इस उदाहरण से देखते है। - 'पतरस, चलो, अपनी तलवार म्यान में रख दो। तब पवित्र शास्त्र का लेख कैसे पूरा होगा कि ऐसा ही होना अवश्य है?'

मुझे नही मालूम कितने हज़ारों लोग कहेंगे, 'अगर इस बहन ने परमेश्वर की न मानी होती तो क्या हुआ होता?' शैतान की हमेशा यह कोशिश रहती है कि परमेश्वर के उद्देश्य, योजनायें और इच्छा को बरबाद करे। प्रभु के आधिपत्य को मानते हुए, साथ-साथ हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि शैतान ने हमारे प्रभु यीशु मसीह को सेवकाई के प्रारंभ में विफल करने की कोशिश की थी।

इसी तरह शैतान मेरे और तुम्हारे पीछे लगा रहेगा। 'इस हद तक मानो। वह काफी है। क्रूस के रास्ता में मत जाओ।' हम में से कई लोगों के साथ शैतान यही करने की कोशिश कर रहा है। यही समय है, शैतान को जोर से 'ना' कहने का और प्रभु को 'हाँ' कहने का। 'हाँ प्रभु, मैं पूरा रास्ता जाने के लिए तैयार हूँ। तुम्हारे वचन का मैं पूरी तरह से पालन करूंगा। 'अगर हम पूर्ण रूप से अपने जीवन के प्रति परमेश्वर के उद्देश्य को सफल कर पाये तो, यह कितना अद्भुत होगा! हम कितनी वैभवपूर्ण विजय देखने जा रहें हैं!

- जोशुआ दानिय्येल

पृष्ठ १ से ...सावधान रहो...

प्रार्थना की यह अन्तर्धारा हमेशा बनी रहती है। तुम्हें इस स्थिति (स्तर) पर पहुँचना है। ऐसे आदमी के साथ आनेवाली घटनायें, धक्का नहीं दे पाती। क्योंकि, पहले ही सब कुछ प्रकट हो जाता है। दिव्य आत्मा से एक गूढ़ संबन्ध बना रहता है। और परमेश्वर के मन में जो है, वहीं तुम प्रार्थना करोगे।

'सावधान रहो और प्रार्थना करो।' इसे इस तरह भी कहा जा सकता है: तुम क्या प्रार्थना कर रहे हों, इस बात में सावधान रहो। क्या तुम्हारी प्रार्थना सांसारिक, स्वार्थी चीजों के लिए है? तुम ऊंचे आत्मिक स्तर पर पहुँचने की आशा करो। और परमेश्वर कह रहे है कि साधारण दैनिक विषयों को तो वह सँभालेंगे।

तुम किस तरह प्रार्थना कर रहे हो - इस बात में सावधान रहो। किस भाव से? क्या वह केवल स्वयं को सन्तुष्ट करने की भावना है? तुम्हें हमेशा एक टूटा हुए मन वाला आदमी बने रहना है। क्या तुम पाप-रहित रह कर प्रार्थना कर रहे हो?

जब प्रार्थना कर रहे हो, तो सावधान रहो। क्या तुम इतने आलसी हो कि उठकर प्रार्थना नही कर सकते? क्या तुम चाहते हो कि परमेश्वर तुम्हारे पीछे चलें, जबकि तुम्हें परमेश्वर के मार्ग और उनके सन्तों के मार्ग पर चलना चाहिए था?

तुम कितनी प्रार्थना कर रहे हो? तुम्हारी प्रार्थना कितनी गहरी है? तुम्हारी इच्छा कितनी गहरी है? और तुम्हारी चाह में कितनी सच्चाई है? क्या तुम परमेश्वर से एक मन हो? तुम किस के लिए प्रार्थना कर रहे हो, उस के लिए सच्चाई और लगन से तुम्हें प्रार्थना करनी है। और परमेश्वर के मन से एक मन हो कर प्रार्थना करनी है। किस हद तक तुम उनमें विलीन हो? युद्ध भूमि में आदमी और गोला-बारूद के कारखाने में आदमी, दोनों एक ही काम में व्यस्त है। एक दूसरे के बिना, दोनों का कोई अस्तित्व नही। प्रार्थना कर रहे तुम, बाहर जाकर संजीवन-काम करने वाले हम , साथ-साथ काम कर रहे हैं। हमें बहुत अधिक प्रार्थना करनी है। उस जरूरत के बराबर हमें प्रार्थना करनी है। क्या तुम जीतने वाले हो या हारने वाले हो? प्रार्थना में तुम किस हद तक लड़ रहे हो?

- स्वर्गीय श्रीमान एन. दानिय्येल

मेरी माँ ने प्रार्थना की

ऐसा किसी ने कहा, 'परमेश्वर के सर्वोत्तम आदमी और औरतें, माँ की प्रार्थना एवं नजरिये और पिता के पावन समर्पण में पाले-पोसे गए हैं - निश्चित ही धन्य हैं। स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़की का ऐसा जीवन, जो केवल प्रसव पीड़ा सहकर ही नही बल्कि प्रार्थना द्वारा इस दुनिया में लाये गये। - जिनके आगमन से पहले ही, माँ या पिता ने अपने हाथ परमेश्वर के हाथों में थमाकर, परमेश्वर पर दृढ़ भरोसा किया।'

स्कड्डर परिवार के नौ प्यारे बच्चे, उन्होंने मिशनरी बनकर मसीह की सेवा की है - क्योंकि माँ एक प्रार्थनामय महिला थी। श्रीमान स्कड्डर कहते, 'यह सत्य है कि हमारे बच्चे, अपनी माँ की प्रार्थना द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कराये गये।' श्रीमती स्कड्डर की यह आदत थी कि हर बच्चे का जन्मदिन, उसके लिए प्रार्थना में बिताये।

जॉन न्यूटन की जिन्दगी में, प्रार्थना करने वाली माँ का प्रभाव निश्चित ही दिखाई पड़ता है। दोस्त कहते कि प्रार्थना करती माँ के घुटनों के बगल में बैठकर उन्होंने प्रार्थना करनी सीखी। इस प्रार्थना का प्रभाव बहुत ही आश्चर्य जनक बना। जॉन जब केवल आठ साल का था उनकी माँ गुजर गयी। मगर उनकी गवाही का प्रभाव कभी नही हटा। एक बार जब वह समुद्र में भटक गया था तो उन्होने सीधी-साधी यह प्रार्थना की, 'मेरी माँ के परमेश्वर, दयालु परमेश्वर, मुझ पर कृपा कर।'

बचपन से ही, मुझे याद है, स्कूल जाने के लिए सुबह, मैं किस तरह उठता था। जागने के लिए कोई अलार्म नही रखा जाता था। हर रोज सुबह ६.०० बजे, प्रार्थना की आवाज़ मुझे नींद से जगाती थी। वहाँ माँ थी जो प्रार्थना कर रही थी। बीते जवानी के दिनों को पलट कर देखूँ तो, मुझे वे स्कूल याद नही जहाँ में जाया करता था और ना ही अध्यापक के नाम। बचपन के लगभग सभी दोस्तों के नाम मेरे दिमाग से गायब हो गये है। कई चीजों के बारे में मेरी यादश्त धुंधली है। सिवाय एक के जो साफ सुस्पष्ट है, माँ प्रार्थना किया करती थी। और वह दृढ़ता से प्रार्थना करती थीं। उनकी प्रार्थना कभी भी जल्दबाजी में या लापरवाही से नही की जाती थी। आँसू की नदी बहाते, ऐसे ही कई घंटे बीत जाते थे जब माँ प्रार्थना किया करती थी। इसका यह नतीजा निकला - एक मसीही सेवकों का परिवार। हर एक बच्चा बड़ा हो कर परमेश्वर का सेवक बना। हर एक की अपनी खास सेवकाई थी - अटल प्रार्थना का यह एक स्पष्ट परिणाम है।

- डिक ईस्टमन की 'नो ईज़ी रोड़' से चुनीहुई।

For More Details Please contact on any of the following Bookstalls

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

बरसातियाँ, घड़ियाँ और फौन्टेन-पेन

बिल्ली ब्रे जैसे आदमी गिने-चुने हैं। गुमराह और नष्ट हो रही आत्माओं से ये दुःखद विषय साफ स्पष्ट है। अविश्वासी जब हमें देखते है तो बहुधा हिचकिचाते, सन्देह से भरे मसीहियों को ही देख पाते है। याकूब ने घोषित किया, '..... विश्वास से मांगे और तनिक भी सन्देह न करे .....' (याकूब १:६) मफ्फेट ने इसका इस तरह अनुवाद किया, '..... बिना सन्देह किये, विश्वास से माँगे .....' सच्ची प्रार्थना, प्रभाव पूर्ण प्रार्थना - एक निःसंदेह प्रार्थना है।

रीस होवेल्स ने एक सन्देह रहित विश्वासी जीवन जीया। बीसवीं सदी का वह एक समर्पित निवेदन (प्रार्थना)-करने वाला मध्यस्थ बना। दूसरे विश्वयुद्ध के उन कठिन सालों के दौरान उन्होंने कई अनाथालयों और बाइबल पाठशाला का निर्माण किया। नॉर्मन ग्रब्ब द्वारा लिखित कृति - 'रीस होवेल्सः इन्टरसेसर (प्रार्थना)' में होवल्स के निःसंदेह, विश्वास की उत्साहिक कहानी का सजीव वर्णन है।

एक बार श्रीमान होवेल्ह मिशनरी के तौर पर अफ्रीका निकलने के लिए तैयारी कर रहे थे। वे और उनके संगी लंदन जानेवाली रेलगाड़ी में चढ़ने के लिए तैयार थे। लम्बी यात्रा तैय कर, वहाँ से एक जहाज पकड़ने वाले थे। उन दोनों के पास कुल मिलाकर केवल दस शिलिंग थे, जिस से वे रेल-गाड़ी में बीस मील ही जा पाते।

होवेल्स ने बताया, 'हमें यकीन था कि पैसे ज़रूर आयेंगे। इसलिए गाड़ी का इन्तजार करने हम प्लैटफार्म पर गये। गाड़ी रवाना होने का समय हो गया। और हमने, जहाँ तक संभव है वहाँ तक सफर करने का निश्चय किया।'

बीस मील के बाद गाड़ी से उतरे। वहां बाद में दोस्तों से उनकी मुलाकात हो गयी, जिन्होंने उन्हें नाश्ते पर न्यौता दिया। निश्चित ही, होवेल्स ने सोचा, परमेश्वर ने सफर का खर्चा देने को इन्ही दोस्तों को भेजा है। निकल चलने का समय हो गया। मगर किसी ने, पैसों की भेंट पेश नही की।

रीस होवेल्स ने गवाही दी, 'पवित्र आत्मा ने मुझ से बात की और कहा, 'अगर तुम्हारे पास पैसे होते, तो तुम क्या करते?''

'टिकट कउन्टर के पास, लाइन में खड़ा होता', मैंने कहा। 'सही, क्या तुम प्रचार नही कर रहें थे कि मेरे वादे तुम्हारी ज़रूरत के बराबर है? तुम अपनी जगह लाइन में खड़े हो तो अच्छा है।'

रीस होवेल्स, मानो अपने पास पैसे हों, वैसे जाकर लाइन में खड़े हो गये। ' जब मेरे सामने दो ही आदमी बचे थे', होवल्स ने बताया, 'एक आदमी भीड़ में से निकलकर आया और बोला, 'मुझे माफ करो, मैं और रूक नही सकता ... मुझे अपनी दुकान खोलनी है।' उन्होंने अलविदा कहा और तीस शिलिंग (पैसे) मेरे हाथ में थमा दिये।'

अफ्रीका रवाना होने, दोनों बन्दरगाह पर पहुँच गये। उन के मिशनरियों के पास यात्रा के लिए कुछ जरूरी सा सामान था, सिवाय तीन छोटी चीज़ों के। हर एक को एक बरसाती, एक घड़ी और फौन्टेन पेन की ज़रूरत थी। उन्होंने इसका जिक्र किसी से नही किया। रवाना होने से पहले एक दोस्त ने पूछा, 'तुम्हारे पास कौन सी घड़ियाँ है? मेरा बेटा, तुम दोनों को एक-एक घड़ी भेंट करना चहता है।'

विस्मयपूर्वक उसका अगला प्रश्न था, 'अफ्रीका के बारिश के मौसम के लिए, बरसाती लिये तैयार हो क्या?' जब होवेल्स का उत्तर 'ना' था, तब उस दोस्त ने एक पता लिखकर कहा कि उसके खर्चे से दो अच्छी बरसाती ले लें। पता लिखने के बाद, उन्होंने पूछा, 'क्या तुम ने कभी ऐसी फौन्टेन पेन देखा हैं?'

'नहीं' होवेल्स ने उत्तर दिया, उसने तुरन्त दोनों को एक-एक नया फौन्टेन पेन दे दिया। सन्त पौलुस के वचन कितने यथार्थ है, '..... परमेश्वर, जो वस्तुएं हैं ही नहीं उनका नाम ऐसे लेता है मानो वे हैं।' (रोमियो ४:१४)

विश्वास पूर्ण प्रार्थना से जैसे-जैसे हर ज़रूरत पूरी होती गयी - तब रीस होवेल्स के उस आनंद की, क्या तुम कल्पना कर पाओगे?

- चुनीहुई

विश्वास भरी प्रार्थना का उत्तर

एक शनिवार के दिन, मैं शाम के समय म्यूरी पहुँच गया। शार्लमौन्ट सरक्यूट पहुँचते ही मुझे एक सूचना मिली। मेरी सुविधा के अनुसार, जितनी जल्दी हो सके, मुझे एक औरत से मिलना था। वह मृत्यु-शय्या पर थी। मुझे जानकारी मिली कि वह बहुत दिनों से बीमार थी। वह जलशोध से पीड़ित थी। अक्सर वह, अपने लोगों से मिलकर उनसे बातें करने की इच्छा जाहिर करती थी। खासकर यह भी कि उनके प्रचारक, जाकर उनसे मिलें। मगर उसके पति ने इसकी अनुमति देने से इनकार कर दिया था। अपनी हंसी उड़ाई जाने को ले कर उसके पति के मन में भय था। वह एक (सोशीनियन) समाजवादी था (वह नास्तिक था)। उस शहर में और अपने समूह में वह कुछ हद तक मशहूर था। अपनी पत्नी जिस से वह बहुत प्रेम करता था और उसकी निराशाजनक हालत देखकर ; इसी हालत ने उसे अपनी पत्नी की इच्छाओं को मानने पर मजबूर किया।

तब मैं वहाँ गया। एक दिलचस्प व्यक्ति से मेरा परिचय करवाया गया; एक युवति जिसकी हर एक नजर मानो यह कह रही हो, 'क्या कोई मेरी कुछ भलाई कर पायेगा?' सूजा हुआ बदन, दुर्बल, फिर भी खूबसूरत चहरा, सब साफ-साफ कह रहे थे कि उसकी हालत बहुत निराशाजनक है; और दो नन्हे प्यारे बच्चे, उस दृश्य को और भी हृदयविदारक बना रहे थे।

उसका पति, एक अच्छा जवान आदमी, उसके आस पास ही था। और उसके प्रति उनकी हर भावना दृढ़ अनुराग से भरी थी। मगर मुझे एहसास नही कि मेरे वहाँ होने से वह अप्रसन्न है। एक तरह से, मुझे लगा कि वह बातचीत उसको जोशपूर्ण लगा होगा।

मगर पीड़ित व्यक्ति के प्रति आशापूर्ण रहने का मुझे उत्साह मिला। क्यों कि मैंने पाया कि निश्चित ही वह 'मन की दीन' थी। हम प्रार्थना में व्यस्त हो गये। मगर मैंने सोचा कि इससे पहले कभी अपने अपको इतना उलझा हुआ मैने नही पाया। साधारणतय जैसे एक मर रहे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, मैंने उसके लिए प्रार्थना करने की कोशिश की। मगर बिना हिचकिचाहट के, मुश्किल से एक शब्द भी नहीं बोल पाया। निश्चित ही, मेरी प्रार्थना में जान नही थी, उसका पति हमें देख रहा है, इस विचार ने मेरी उलझन को और बढ़ा दिया। मुझे लगा कि मैं अब प्रार्थना बंद ही करूं।

जैसे समय बीतता गया, उसके दुबारा चंगा होने का विचार, एक अजीब तीव्रता से मेरे मन में आया। और मैं उस विचार की तरफ झुकाव होने का साहस किया। अचानक इतनी तेजी से शब्द मेरे मुहं से निकल रहे थे कि मैं सबकुछ बोल नही पा रहा था। मुझे लगा कि यह सच में 'विश्वास पूर्ण प्रार्थना है', जिसके बारे में सन्त याकूब ने कहा, 'जिसके द्वारा रोगी चंगा हो जायेगा'। ऐसा लगा कि मैं उसकी तरफ से, प्रभु के हाथों, दुबारा जीवन माँग रहा हूँ। अंत में मैंने प्रार्थना का समापन किया। मगर तुरन्त ही यह सोचने में अपने आप को रोक नही पाया कि मैं बहक गया थाऔर एक भ्रान्ति को स्थान दिया, जो मेरे उपहास का कारण बन सकता है। और बिना तैयार अप्रत्याशित दिलों को हानि पहुँचा सकता है।

मैंने जाने की अनुमति ली। और पीड़ित स्त्री ने अनुरोध किया कि मैं जल्दी ही दुबारा उन्हें देखने आऊँ। और उनका पति विस्मित चहरा लिए, साधारण सभ्यता को भी भूल गया और मुश्किल से अलविदा कह पाया।

मैं अपने रहने के स्थान पर लौट आया। मेरे मन में बहुत दर्द भरे विचार उठे - ऐसे परिवार में, मेरी

पृष्ठ ४ पर..विश्वास भरी प्रार्थना...

सत्य की परख!

'इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३:२३)'

'क्या कारण है'

न्यूज़ीलैण्ड के बहुत दक्षिणी भाग में ड्यूनडिन नामक स्थान है। यहाँ ज्यादातर, स्कॉटलैण्ड से आये प्रवासी बसे है। ऐसों मे से एक था रॉबर्ट लेग्डलॉ । वह सन् १८८६ में, पत्नी और पेहलौठे बेटे रॉबर्ट जूनियर के सात यहाँ आये थे। पति-पत्नी दोनों सच्चे मसीही थे। परमेश्वर के प्रेम और ज्ञान में उन्होंने अपने छः बच्चों को पाला। सोलह साल की आयु में, नव जवान रॉबर्ट ने स्कूल छोड़ा। और 'लेग्डलॉ अण्ड ग्रे हार्डवेर मरचेन्ट्स' में एक जूनियर क्लर्क बनकर अपना व्यापार अनुभव प्राप्त करना प्रारंभ किया। तब तक उनके मन में बाइबल के काफी सारे लेख संचित हो गए। मगर हृदय, मसीह को अपना हृदय नही सौंपा था। वह एक साल के बाद की बात थी, जब टॉर्री अलेक्जैंडर मिशन में, उन्होंने मसीह के लिए अपना मन खोला था।

वह रॉबर्ट लेग्डलॉ के लिए भावुक होकर लिया गया क्षणिक निर्णय नही था। बहुत सोच-विचार करके, किया गया चुनाव था; उनका बाकी जीवन की नींव उसी निर्णय पर बनी। दो साल बाद उनका सारा परिवार ऑकलैण्ड चला गया। उन्नीस साल के रॉबर्ट ने वरिष्ठ यात्री-थोक विक्रेता का पद ग्रहण किया। ओटागो और साउथलैण्ड उनके व्यापार-यात्रा का क्षेत्र था। मगर उनके मन में कुछ भय था। उन दिनों दारू पीने की आदत बहुत थी। व्यपारियों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने ग्राहकों को स्थानीय शराबख़ाने में ले जाकर शराब पिलाएं।

अपने जीवन के, बाद सालों में लेग्डलॉ एक ग्राहक से अपनी पहली मुलाकात की कहानी, कहने से कभी नही थकते थे। वह नाट बेट्स नामक एक लुहार था। जब लेग्डलॉं वहां पहुँचे, बेट्स एक भार वाहक क्लाइडस्डेल धोड़े के खुरों को नाल लगा रहा था। घोड़ा बहुत तेजी से उछलकर लात मार रहा था। लुहार के चहरे से पसीना बह रहा था और वातावरण उसकी गालियों से भरा था। तुरन्त उसने कहा, 'नव जवान मैं तुम्हें गालियां देते नही देखा' 'नही, मिस्टर बेट्स' रॉबर्ट ने उत्तर दिया, 'मैं गालियां नहीं देता।' साधारण अंग्रेजी ही में मैं खूब अपना काम चला लेता हूँ।'

थोड़े समय बाद, 'नव जवान, क्या तुम धूमपान नहीं करते?' 'नही, श्रीमान बेट्स, मैं धूम्रपान भी नही करता।' और एक मिनट में आप पूंछने वाले हो कि क्या मैं शराब पीता हूँ। और मैं कहूँगा, 'नही श्रीमान बेट्स, मैं शराब नहीं पीता।'' बायें हाथ में चिमटे से लाल और बहुत गरम नाल को निहाई पर रखकर, लुहार ने दांये हाथ से लिए हथौड़े को मारने के लिए ऊपर उठाया था। और वैसे के वैसे ही रूक गया मानो पत्थर बन गया हो। तब उसने हथौड़ा निहाई पर रखा। और रॉबर्ट के कंधे पर अपना भारी, गंदा, पसीनेवाला हाथ रखकर कहा, 'उस पर कायम रहो, बेटे, कायम कहो।'

अपनी यात्राओं के दौरान न्यूज़ीलैण्ड के मॉन्टगोमेरी वार्ड में, रॉबर्ट को डाक-बिक्री व्यापार की जानकारी मिली। सन् १९०९, ऑकलैण्ड में अपने परिवार से दुबारा शामिल होने के बाद उन्हें यह अवसर मिला। कई महीने कठिन परिश्रम करने के बाद, १२५ पृष्ठ की एक सूची तैयार की। और आशापूर्वक उसे 'लेग्डलॉ लीड्स केटॉलॉग न.१' नाम से निकाला। तब २० बाइ ३० फुट का कमरा किराया पर लेकर अपना व्यॅपार प्रारंभ किया। उस सूची का दावा था कि चड्डी-बनियान कपड़े से ले कर पंसारी का सामन, प्रसाधन सामग्री, खेती के औज़ार - दुनिया का हर चीज़ उपलब्ध है, और वो भी रियायती दामों पर। अधिकतर कृषि-प्रधान देश,न्यूज़ीलैण्ड में यह पूर्ण रूप से नया विषय था और उसके प्रति प्रतिक्रिया बड़ी उत्साहक रही। आर्डर मिलते गये। जल्दी ही वह कमरा छोटा पड़ गया। सत्रह महीनों में लेय्डलॉ लीड्स को तीन बार जगह की कमी के कारण जगह बदलनी पड़ी।

सन् १९१३ तक जगह की कमी एक मुख्य विषय बन गयी। एक बहुत बड़ी जगह खरीदकर, ऑकलैण्ड की सब से बड़ी वाणिज्य इमारत का निर्माण किया गया। उस में पाँच मंज़िल और बेसमेन्ट, कुल फ़र्श का विस्तीर्ण ७-१/२ एकड़ था। पहला विखयुद्ध का आरंभ होने से तीन महीने पहले, सन् १९१४ अप्रैल में, उस नये स्थान पर उस संस्था का पुनः प्रारंभ हुआ। यह केटॉलॉग न.१ का पहला आर्डर मिलने के साढ़े चार साल बाद की यह बात है। सन् १९१८ में 'फारमर्स यूनियन ट्रडिंग कॅम्पेनी' में उसका विलयन हुआ, जिसका पचास साल से भी अधिक, रॉबर्ट लेय्डलॉ जनरल मैनेज़र रहा।

रॉबर्ट लेय्डलॉ एक सफल व्यापारी बना। मगर यह रॉबर्ट के विषय में, यही एक विशेष बात नही थी। परमेश्वर का व्यापारी रहने के लिए, उनकी बुलाहट थी। अपनी जवानी के दिनों में, मन फिराने के तुरन्त बाद, रॉबर्ट ने अपनी डायरी में एक विषय लिखा था - अपनी कमाई में परमेश्वर के काम के लिए दस प्रतिशत देने का वादा। अपनी कमाई की बढ़ौतरी के साथ-साथ उस भेंट को भी बढ़ाने की बात लिखी थी। बाद में, जब लेय्डलॉ लीड्स व्यापार की तेजी से वृद्धि हुई तो, उन्होंने दुबारा अपने डायरी में लिखा 'सितंबर १९१९, पच्चीस साल, मैं अपने पुराने अंशांकित स्केल को बदलकर, अब अपनी कमाई में से आधा यानी पचास प्रतिशत देने का निर्णय कर रहा हूँ।'

अपने जीवन के अगले साठ वर्ष तक इस बात पर कायम रहे। 'बेतेस्दा चारिटेबुल ट्रस्ट' की स्थापना की गयी। अनगिनत हज़ारों डॉलर, इस संस्था के द्वारा हर तरह के मिशनरी सेवकाई के लिए सौंपे गये।

सेवकाई तो रॉबर्ट के हृदय के बहुत करीब था। सन् १९१३ में ऑकलैण्ड टाउन हॉल में चार्ल्स अलक्जैंडर ने एक मिशन सभा का आयोजन किया। तब लेय्डलॉ ने साथी मिशनरी विलबर चॉपमॅन से अनुरोध किया वे उनके कर्मचारीगणों के लिए खास, दोपहर सभा में संदेश दें। तब उनकी गिनती करीब दो सौ की थी। डॉ. चॉपमॅन का परिचय करते, लेय्डलॉ ने खुद अपनी मन फिराव के बारे में बात की। उन्होंने तब अपने कर्मचारीगणों से कहा, 'मैं हर एक से, यीशु मसीह के साथ अपने संबन्ध के बारे में व्यक्तिगत रूप से बात नही कर पाऊँगा। इसलिए में वादा करता हूँ कि मैं विस्तार में लिखूँगा कि मैं क्यों एक मसीही हूँ।' उस वादे को निभाने के लिए उन्होंने 'दा रीजन वॉय' (क्या कारण है) लिखा। शायद यही सब से प्रभावशाली धार्मिक पर्ची है जो कभी लिखी गयी हो। ४६ पन्नों कि यह पुस्तक है। तीस भाषाओं में इस पर्ची का अनुवाद हुआ। दो करोड़ से भी अधिक प्रतियां, बेचे या मुफ्त में बाटे गये। यीशु मसीह के साथ 'सौदा पक्का' करने में, कई लाखों लोगों के लिए यह पुस्तक एक साधन बनी।

मसीह के बारे में बाते करने के लिए रॉबर्ट लेय्डलॉ हमेशा उत्सुक रहते थे। जैसे अस्वॉल्ड सान्डर्स दोहराते हैं, 'उन दिनों वही एक मात्र न्यूजीलैण्डर है जो न्यूजीलैंड के किसी भी टाउनहाल में हो रही सभी सेवकाई सभा में जाता और वहां सभा भर भी जाती थी।' अपने जीवन द्वारा कई लोगों को मसीह के लिए जीतने का सौभाग्य देने के लिए, रॉबर्ट हमेशा परमेश्वर को धन्यवाद देता।

- जॉन उडब्रिड्ज की 'मोर देन कॉनकरर्स' में से एक लेख।

पृष्ठ ३ से..विश्वास भरी प्रार्थना...

काल्पनिक आशावादी व्यवहार को ले कर लोग कुछ कहेंगे; जिससे उस पीड़ा झेलनेवाली व्यक्ति के कोमल मन को कही ठेस न पहुँचे। मगर फिर भी, उसके दुबारा स्वस्थ होने की आशा मुझ में बनी रही। मगर मैंने सोचा, यह विचार अपने आप तक ही रखूँ। और जब उसके परिवार के साथ प्रार्थना कर रहा होता, तब एक मर रहे व्यक्ति के लिए जैसा साधारणतय प्रार्थना करते हैं प्रार्थना करता। मगर सब व्यर्थ ही था।

उस विचार की प्रबलता अकसर मेरे विवेक को चुनौती देती थी; उसके निवास पर भी मैं जीवनदान की माँग करने पर मजबूर हो गया। घर का निष्ठावान मालिक और उनका परिवार, सब आश्चर्यचकित रह गये।

रविवार शाम के समय, सभा समाप्त होने के बाद, मैं दुबारा अपने रोगी से मिलने गया। और अपने विचित्र, दृढ़ और गंभीर विश्वास के कारण दुबारा उधर इकट्ठे हुए सब लोगों को विस्मय मे डाल दिया। मैंने उनसे जाने की इज़ाज़त ली। मगर यह जोरदार प्रेरणा देकर कि वह अपना मन दिव्य प्रायश्चित पर केन्द्रित करें; परमेश्वर के पुत्र यीशु का, अपने परम पिता से की गई प्रार्थना - 'मेरी नही, पर तेरी इच्छा पूरी हो।' उन्ही की तरह आज्ञाकारी बनने का लक्ष्य रखे।

मैं अपनी दिन चर्या पूरी कर वापस लौट गया। छः सप्ताह के अंत में, बहुत शान्त पीड़ा सहनेवाली अपने रोगी को स्वास्थ्य पाकर, विश्वासी समाज के एक सदस्य के रूप में पाया।। पति में सब विरोध गायब था। उन्होंने खुशी से मेरा आह्वान किया। और बहुतसे शब्दों से मेरा धन्यवाद किया। मुझे अपने साथ भोजन करने पर मजबूर किया; एक खुशहाल परिवार में, मैं भी सम्मिलित हुआ। दोपहर के समय, बाइबल कक्षा में मैं अपनी ठीक होती रोगी से मिला। हमें शान्ति देनेवाली हर चीज के प्रति वह ग्रहणशील थी।

उसने तेजी से चंगाई पाई। 'प्रभु यीशु के लहू द्वारा मुक्ति - और अपने पापों की क्षमा' पाकर वह जल्दी ही आनंद में मग्न हुई।

-रेवरेण्ड हेच मोर, की जीवनी से।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।